International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत-बांग्लादेश संबंधो में धार्मिक कूटनीति की भूमिका

सर्वेश कुमार[1], डॉ. संजय मिश्रा[2]

[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद (उ.प्र.), भारत
[2]प्रोफेसर, सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.), भारत

सार

भारत-बांग्लादेश संबंधों का इतिहास धार्मिक गतिशीलता के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। औपनिवेशिक काल से पहले के धार्मिक समन्वय से लेकर औपनिवेशिक काल की विभाजनकारी नीतियों तक और विभाजन की दर्दनाक विरासत से लेकर स्वतंत्रता के बाद की चुनौतियों और सहयोग तक दोनों देशो के संबंधो में धर्म एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। इसलिए यह शोधपत्र भारत और बांग्लादेश के बीच द्विपक्षीय संबंधों को आकार देने में धार्मिक कूटनीति की भूमिका की जांच करता है, तथा उनके साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत से उत्पन्न होने वाले पारस्परिक प्रभावों और संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करता है। यह लेख ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरणों पर गहराई से चर्चा करता है जहां धार्मिक कूटनीति ने सहयोग को बढ़ावा देने या तनाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धर्म और राजनीति के जटिल अंतर्संबंध को उजागर करने के लिए प्रमुख घटनाओं, जैसे कि एन्क्लेव का आदान-प्रदान, सीमा पार प्रवास का प्रबंधन और द्विपक्षीय संधियों का पता लगाता है। यह शोधपत्र इस बात का पता लगता है कि धार्मिक कूटनीति भारत-बांग्लादेशी संबंधों में एक सेतु के रूप में कैसे काम कर सकती है।

कीवर्ड: भारत-बांग्लादेश संबंध, धार्मिक कूटनीति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान,

परिचय

भारत-बांग्लादेश संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों के समृद्ध ताने-बाने से बने है। साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत वाले पड़ोसी देशों के रूप में भारत और बांग्लादेश के बीच के सम्बन्ध अक्सर धार्मिक कूटनीति से प्रभावित रही है। धार्मिक नेताओं, संस्थानों और साझी मान्यताओं ने दोनों

देशों के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस अध्ययन का उद्देश्य धार्मिक कूटनीति और भारत-बांग्लादेश संबंधों के बीच जटिल द्विपक्षीय संबंधों को समझना है। धार्मिक कूटनीति, जिसमें राज्यों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए धार्मिक नेताओं और संस्थानों का उपयोग शामिल है। भारत-बांग्लादेश संबंधों का एक महत्वपूर्ण लेकिन कम खोजा गया पहलू रहा है। दोनों देशों के बीच व्यापक राजनीतिक और सामाजिक संबंधों को समझने के लिए इस आयाम को समझना महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन इन संबंधों को आकार देने में धार्मिक कूटनीति की ऐतिहासिक और समकालीन भूमिकाओं को उजागर करने का प्रयास करता है, तथा शांति को बढ़ावा देने और संघर्षों को बढ़ाने की इसकी क्षमता दोनों को उजागर करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वर्तमान भारत और बांग्लादेश को शामिल करने वाले इस क्षेत्र में धार्मिक विविधता और अंतर्क्रिया का समृद्ध इतिहास है। पूर्व-औपनिवेशिक युग के दौरान, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और बाद में इस्लाम ने अविभाजित बंगाल के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 13वीं शताब्दी के दौरान बंगाल में इस्लाम का आगमन मुख्य रूप से सूफी मिशनरियों और व्यापारियों के द्वारा हुआ जिसने यहाँ मौजूद अन्य धर्मो के साथ एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय को जन्म दिया। इस अवधि के हिंदू संत चैतन्य महाप्रभु जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों ने अपनी शिक्षाओं में भक्ति पर जोर दिया और विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया गया था।

18वीं शताब्दी के मध्य से 20वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश शासन के औपनिवेशिक युग ने इस क्षेत्र में धार्मिक गतिशीलता को और जटिल बना दिया। अंग्रेजों ने ऐसी नीतियाँ लागू कीं जो धार्मिक विभाजन को बढ़ाती थीं, जैसे कि फूट डालो और राज करो की रणनीति, जिसका उद्देश्य धार्मिक और सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देकर औपनिवेशिक शासन के विरोध को कमज़ोर करना। इसके साथ ही पश्चिमी शिक्षा और कानूनी प्रणालियों की शुरूआत ने पारंपरिक धार्मिक संस्थानों और प्रथाओं को भी बाधित किया। 1947 में भारत का विभाजन एक महत्वपूर्ण घटना था, जिसने इस क्षेत्र में धार्मिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। इस विभाजन से पूर्वी बंगाल अब पूर्वी पाकिस्तान बन गया। विभाजन के कारण बड़े पैमाने पर जनसंख्या स्थानांतरण और सांप्रदायिक हिंसा ने धार्मिक समुदायों के बीच गहरी दुश्मनी पैदा कर दी । पूर्वी पाकिस्तान में विभाजन के बाद की प्रारंभिक अवधि इस्लाम आधारित एक राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने का प्रयास हुआ, जिसने हिंदू और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों को हाशिए पर डाल दिया। पश्चिमी पाकिस्तानी नेतृत्व द्वारा पूर्वी पाकिस्तान की राजनीतिक और आर्थिक उपेक्षा,

सांस्कृतिक और भाषाई मतभेदों ने साथ मिलकर असंतोष को बढ़ावा दिया जो अंततः 1971 में बांग्लादेश मुक्ति युद्ध का कारण बना। भारत ने बाग्लादेश के स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसकी परिणति एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में बांग्लादेश के निर्माण से हुई।

स्वतंत्रता के बाद बांग्लादेश ने धर्मनिरपेक्ष संविधान अपनाया। हालाँकि, धर्म और राजनीति के बीच का अंतरसंबंध भारत के साथ उसके संबंधों को प्रभावित करता रहा। इस्लामवादी राजनीतिक दलों के उदय और धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के समय-समय पर क्षरण ने बांग्लादेश में धार्मिक सद्भाव के लिए चुनौतियाँ खड़ी कीं। स्वतंत्रता के बाद के युग में भारत-बांग्लादेश संबंधो सहयोग और संघर्ष दोनों रही है, जो अक्सर धार्मिक विचारों से भी प्रभावित होते रहे हैं। धार्मिक अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार, नदी जल बटवारा, सीमा पार आतंकवाद और कट्टरपंथी धार्मिक समूहों के प्रभाव जैसे मुद्दों ने समय-समय पर संबंधों को तनावपूर्ण बनाया है। हालाँकि धार्मिक कूटनीति ने दोनों देशों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंतरधार्मिक संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और धार्मिक नेताओं की भागीदारी से जुड़ी पहलों ने तनाव को कम करने और शांति को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, भारतीय आध्यात्मिक नेताओं की बांग्लादेश और बांग्लादेशी धार्मिक नेताओं की भारत की यात्राओं ने सांस्कृतिक और धार्मिक समझ को बेहतर बनाने में मदद की है।

धार्मिक कूटनीति

धार्मिक कूटनीति से तात्पर्य राज्यों के बीच संवाद, बातचीत और संघर्ष समाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए धार्मिक नेताओं, संस्थानों के उपयोग से है। पारंपरिक कूटनीति में मुख्य रूप से राजनीतिक और आर्थिक अभिनेता शामिल होते हैं, जबकि धार्मिक कूटनीति में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए धार्मिक नेताओं, संस्थाओं के नैतिक शिक्षाओं और सांस्कृतिक प्रभाव का लाभ उठाया जाता है। कूटनीति का यह रूप व्यक्तियों और समाजों पर धर्म के गहन प्रभाव को स्वीकार करता है, यह मानते हुए कि धार्मिक नेता अक्सर उन विभाजनों को पाट सकते हैं जिन्हें राजनीतिक हस्तियाँ नहीं पा सकतीं।

भारत-बांग्लादेश संबंधों में धार्मिक कूटनीति की भूमिका

धार्मिक नेताओं ने ऐतिहासिक रूप से भारत-बांग्लादेश संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बांग्लादेश में एक प्रमुख इस्लामी नेता मौलाना भशानी और हिंदू भिक्षु स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों की शिक्षाओं ने अंतर-धार्मिक सद्भाव पर जोर दिया, काफी प्रभाव पड़ा है। सामाजिक न्याय के लिए मौलाना भशानी की वकालत और बंगाली राष्ट्रवादी आंदोलन के लिए उनके समर्थन ने बांग्लादेश के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में मदद की, जबकि स्वामी विवेकानंद का धार्मिक सहिष्णुता का संदेश भारत और बांग्लादेश

दोनों में गूंजता रहा है। कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नहै

1. रामकृष्ण मिशन और भारत-बांग्लादेश सांस्कृतिक आदान-प्रदान: रामकृष्ण मिशन एक प्रमुख हिंदू धार्मिक और परोपकारी संगठन है, जो भारत और बांग्लादेश के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से शामिल रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मिशन ने धार्मिक सद्भाव और समझ को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम और पहल आयोजित की हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण स्वामी विवेकानंद की जयंती का वार्षिक उत्सव है, जो दोनों देशों में मनाया जाता है। इन समारोहों में अक्सर सांस्कृतिक प्रदर्शन, सेमिनार और अंतरधार्मिक संवाद शामिल होते हैं, जो साझा आध्यात्मिक विरासत पर जोर देते हैं और एकता की भावना को बढ़ावा देते हैं। रामकृष्ण मिशन के प्रयास इस बात का उदाहरण हैं कि कैसे धार्मिक संगठन कूटनीति और अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

2. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ढाका यात्रा : जून 2015 में, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ढाका का दौरा किया, जो भारत-बांग्लादेश संबंधों में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह यात्रा सांस्कृतिक और धार्मिक कूटनीति पर जोर देने के लिए उल्लेखनीय थी। मोदी ने ढाका में एक ऐतिहासिक हिंदू मंदिर, ढाकेश्वरी मंदिर का दौरा किया, जो दोनों देशों के बीच साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का प्रतीक है। इस इशारे का उद्देश्य सांस्कृतिक बंधनों को मजबूत करना और धार्मिक विविधता के लिए आपसी सम्मान को मजबूत करना था। 2015 का भूमि सीमा समझौता हालाँकि यह मुख्य रूप से एक राजनीतिक समझौता था, लेकिन लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवादों का समाधान धार्मिक नेताओं की भागीदारी से सुगम हुआ, जिन्होंने शांतिपूर्ण बातचीत और स्थानीय समुदायों की धार्मिक भावनाओं के सम्मान की वकालत की। इस यात्रा के दौरान, कनेक्टिविटी, व्यापार और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग सहित कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इस यात्रा ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में धार्मिक और सांस्कृतिक कूटनीति के महत्व पर प्रकाश डाला।

3. रोहिंग्या संकट का प्रभाव : 2017 में शुरू हुए रोहिंग्या संकट का भारत-बांग्लादेश संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। बांग्लादेश ने म्यांमार में उत्पीड़न से भागकर आए बड़ी संख्या में रोहिंग्या शरणार्थियों को शरण दी है। भारत ने शरणार्थी संकट के प्रबंधन में बांग्लादेश को मानवीय सहायता प्रदान की है।

4. **नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए):** दिसंबर 2019 में भारतीय संसद द्वारा पारित नागरिकता संशोधन अधिनियम ने भारत-बांग्लादेश संबंधों में महत्वपूर्ण तनाव पैदा कर दिया। यह अधिनियम बांग्लादेश सहित सभी पड़ोसी देशों के गैर-मुस्लिम शरणार्थियों को भारतीय नागरिकता का मार्ग प्रदान करता है, इसको बांग्लादेश में कुछ वर्गों द्वारा भेदभावपूर्ण माना गया। बांग्लादेशी सरकार ने द्विपक्षीय संबंधों पर अधिनियम के संभावित प्रभावों पर चिंता व्यक्त की। इस घटना ने सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने में

धार्मिक कूटनीति की चुनौतियों और जटिलताओं को उजागर किया।

5. अंतरधार्मिक संवाद और शांति सम्मेलन (2018-2023): 2018 और 2023 के बीच धार्मिक नेताओं को शामिल करते हुए कई अंतरधार्मिक संवाद और शांति सम्मेलन आयोजित किए गए। इन आयोजनों में शांति, सहिष्णुता और आपसी समझ को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इनमें से उल्लेखनीय 2023 में ढाका में आयोजित अंतरधार्मिक सम्मेलन था, जहाँ विभिन्न धर्मों के धार्मिक नेताओं ने उग्रवाद से निपटने और सद्भाव को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा किया । इस तरह के संवाद गलत धारणाओं को दूर करने और सहयोग की भावना को बढ़ावा देने में सहायक रहते हैं।

6. शेख मुजीबुर रहमान की जन्म शताब्दी (2020-2021): बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीबुर रहमान की जन्म शताब्दी मुजीब बोरशो मार्च 2020 से दिसंबर 2021 तक मनाई गई। भारत ने इन समारोहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस समारोह में शामिल हुए और दोनों देशों के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित किया गया। इस दौरान विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों ने आपसी समझ और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में काम किया। भारतीय नेताओं ने इन समारोहों में भाग लिया, जिसमें साझा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर जोर दिया गया।

द्विपक्षीय संबंधों पर साझा धार्मिक संघर्ष का प्रभाव

1. सांप्रदायिक दंगे और तनाव: धार्मिक संघर्षों ने कभी-कभी भारत-बांग्लादेश संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है, जिससे दोनों देशो के बीच कूटनीतिक तनाव पैदा होता है। सांप्रदायिक हिंसा की घटनाओं, जैसे कि 2001 में बांग्लादेश में हिंदू विरोधी दंगे, जिसके परिणामस्वरूप हिंदू मंदिरों और संपत्तियों पर हमले हुए, इसपे भारत सरकार और मीडिया से कड़ी प्रतिक्रियाएँ दी । 2002 में भारत के गुजरात में मुस्लिम विरोधी दंगे, पर बाग्लादेश से प्रतिक्रिया देखने को मिली ।ये घटनाएँ न केवल तत्काल समुदायों को प्रभावित करती हैं, बल्कि अविश्वास और शत्रुता को बढ़ावा देकर व्यापक द्विपक्षीय संबंधों को भी प्रभावित करती हैं।

अगस्त 2024 में बांग्लादेश में कोटा विरोधी उग्र और अनियंत्रित आन्दोलन के कारण शेख हसीना के इस्तीफे के बाद बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा में उल्लेखनीय वृद्धि हो गई है। बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद (BHBCUC) ने हिंदू घरों, व्यवसायों और इस्कॉन मंदिरों सहित अन्य मंदिरों में बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ और आगजनी की जानकारी दी है ,कई लोगो ने इस दंगों के दौरान अपनी जान गंवा दी थी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों पर चिंता व्यक्त की है।

2. धर्म का राजनीतिक उपयोग: धर्म का राजनीतिक में उपयोग भारत-बांग्लादेश संबंधों को संबंधों को तनावपूर्ण बना देता है। दोनों देशों के राजनीतिक नेताओं ने कभी-कभी समर्थन हासिल करने या नीतियों को सही ठहराने के लिए धार्मिक पहचान पर जोर देने वाली राजनीतिक बयानबाजी दोनों देशो में तनाव को बढ़ा देती है और सहयोग में बाधा उत्पन्न करती है। `

धार्मिक कूटनीति को बढ़ावा के लिए कुछ सिफारिशें

1. 1.अंतरधार्मिक संवादों को संस्थागत बनाएँ: नियमित बातचीत को सुविधाजनक बनाने और उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए दोनों सरकारों द्वारा समर्थित स्थायी अंतरधार्मिक संवाद मंच स्थापित करें।
2. 2.विविध धार्मिक नेताओं को शामिल करें: समावेशी और प्रतिनिधि संवाद सुनिश्चित करने के लिए अल्पसंख्यक समुदायों सहित धार्मिक नेताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करें।
3. शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दें: साझा विरासत और मूल्यों पर जोर देने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का समर्थन करें। धार्मिक अध्ययन से संबंधित अनुसंधान और शैक्षिक परियोजनाओं पर सहयोग करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को प्रोत्साहित करें।
4. कानूनी और संस्थागत ढाँचे को मजबूत करें: धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा करने और धार्मिक संघर्षों को संबोधित करने के लिए कानूनी और संस्थागत ढाँचे विकसित करें। सुनिश्चित करें कि धार्मिक हिंसा के पीड़ितों का समर्थन करने और सुलह को बढ़ावा देने के लिए तंत्र मौजूद हैं।

निष्कर्ष

भारत और बांग्लादेश के बीच जटिल संबंध कई कारकों से आकार लेते हैं,जिनमें साझा इतिहास,सीमा मुद्दे, धार्मिक संघर्ष और सांप्रदायिक तनाव का प्रभाव शामिल है। सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं दोनों देशो के द्विपक्षीय संबंधों में विश्वास और समझ बनाने के लिए निरंतर संवाद और सहयोग की आवश्यकता को उजागर करती हैं। इस अध्ययन ने भारत-बांग्लादेश संबंधों में धार्मिक कूटनीति की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला है। ऐतिहासिक संदर्भों से लेकर समकालीन घटनाक्रमों तक, धार्मिक प्रभावों ने सहयोग और संघर्ष दोनों के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों को कैसे आकार दिया है। मुख्य निष्कर्षों में संवाद को बढ़ावा देने और विवादों को सुलझाने में धार्मिक नेताओं और संगठनों के सकारात्मक प्रभाव के साथ-साथ धार्मिक संघर्षों और धर्म के राजनीतिक उपयोग से उत्पन्न चुनौतियों को शामिल किया गया है। नीति निर्माताओं और राजनयिकों के लिए भारत-बांग्लादेश संबंधों में धर्म की भूमिका को समझना महत्वपूर्ण है। प्रभावी धार्मिक कूटनीति आपसी सम्मान को बढ़ा सकती है, अंतर्निहित सामाजिक मुद्दों को संबोधित कर

सकती है और मजबूत द्विपक्षीय संबंधों का निर्माण कर सकती है। यह कूटनीतिक प्रयासों में धार्मिक नेताओं और समुदायों की समावेशी और निरंतर भागीदारी की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। धार्मिक कूटनीति भारत और बांग्लादेश के बीच शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक अनूठा और मूल्यवान उपकरण प्रदान करती है। साझा धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का लाभ उठाकर, दोनों देश समकालीन चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं और अधिक सामंजस्यपूर्ण और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। अंतरधार्मिक संवाद, समावेशी नीतियों और सहयोगात्मक पहलों के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता भारत-बांग्लादेश संबंधों को मजबूत करने में धार्मिक कूटनीति की पूरी क्षमता को साकार करने के लिए आवश्यक होगी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. माजुमदार, आर. सी. (1971). *द हिस्ट्री ऑफ़ बंगाल*. एन. वी. पब्लिकेशन.
2. गांधी, नेहरू और मुस्लिम लीग: द पोलिटिक्स ऑफ़ पार्टिशन. *द मैनचेस्टर हिस्टोरियन*, 23 मार्च 2020. https://manchesterhistorian.com/2020/partition-of-india-by-marton-jasz/
3. ज़कारिया, अनाम. (2019). *1971: ए पीपल्स हिस्ट्री फ्रॉम बांग्लादेश, पाकिस्तान एंड इंडिया*. पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया.
4. शेंडल, वान. (2009). *ए हिस्ट्री ऑफ़ बंग्लादेश*. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. राघवन, श्रीनाथ. (2013). *1971: ए ग्लोबल हिस्ट्री ऑफ़ द क्रिएशन ऑफ़ बांग्लादेश*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. जसवंत सिंह और एस. पी. भाटिया. (2008). *कॉनफ्लिक्ट एंड डिप्लोमेसी: यूएस और द बर्थ ऑफ़ बांग्लादेश*. रूपा एंड कंपनी.
7. इकोनॉमिक टाइम्स. (2015, जून 6). पीएम नरेंद्र मोदी की ऐतिहासिक बांग्लादेश यात्रा. https://economictimes.indiatimes.com/slideshows/nation-world/pm-narendra-modis-landmark-bangladesh-visit/pm-modi-planting-a-sapling-in-dhaka/slideshow/47566792.cms
8. ब्यूटीफुल बांग्लादेश. (n.d.). रामकृष्ण मिशन मंदिर, ढाका. https://beautifulbangladesh.gov.bd/district-destination/dhaka/landmarks/107
9. बीबीसी न्यूज़ हिंदी. (2017, सितंबर 10). रोहिंग्या संकट पर भारत का रुख़ क्या है? https://www.bbc.com/hindi/india-41217066

10. इंडिया टीवी न्यूज़ डेस्क. (2021, मार्च 27). मोदी ने बांग्लादेश में मटुआ मंदिर में पूजा की. इंडिया टीवी न्यूज़. https://www.indiatvnews.com/news/india/prime-minister-narendra-modi-jeshoreshwari-orakandi-temples-visit-modi-bangladesh-visit-day-2-693798
11. बीबीसी न्यूज़ हिंदी. (2019, दिसंबर 9). नागरिकता संशोधन विधेयक, 2019 से जुड़ी हर ज़रूरी जानकारी. https://www.bbc.com/hindi/india-50707185
12. आरवीए बांग्ला न्यूज़ सर्विस. (2023, जून 1). बांग्लादेश के नेताओं ने धर्मों की विविधता के प्रकाश में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर अंतरधार्मिक संवाद आयोजित किया. एशियन न्यूज़.
13. टीवी9 भारतवर्ष. (2021, मार्च 17). शेख मुजीबुर रहमान की 101वीं जयंती पर पीएम मोदी ने दी श्रद्धांजलि, कहा- भारतीयों के भी हीरो हैं बंगबंधु. https://www.tv9bharatvarsh.com